

मैथिली राष्ट्रिय साप्ताहिक



પ્રમ ભટ્ટરાઈસ' લોકમે બદલ ઉત્સાહ

हम नमूनाक प्रधानमन्त्री बनिक'देखाएब-बाबूराम भट्टराई



एखन जनता ने राजनीतिक
तीनमे अछि आ ने तेरहमे, मुदा
तैयो ई बहुतरास दुर्भोगसब भोगि
रहल अछि । ई एकर अपन
करणीक फल अछि से नइ ।
असलमे ई जाहि दल आ
प्रतिनिधिके चुनलक ओकर
अप्रतिबद्धता आ मूल्यहीनताके
परिणाम अछि । ओसब देशप्रति,
नवनिर्माण प्रति, देशक संरचना
विकासप्रति आ संविधान लेखन
सहित शान्ति-सुरक्षा प्रति गम्भीरे
नहि अछि ।

राजनीतिस' सम्बद्ध एहि ठाम
दूटा कहबी चरितार्थ देख'मे आवि
रहल अछि— 'वर भेल बूडिबक,
दहेजके लेत '? आ 'खुद्दाबले पडू
चिकरै छै !' ई नेता आ
प्रधानमन्त्रीपर फिट बैठैत अछि ।
बाबूराम भट्टराइ पैंतीसम
प्रधानमन्त्रीक रुपमे निर्वाचीत

भेलाह अछि । एहि व्यक्तिक
इमानदारिता आ प्रतिबद्धतापर
शंका नहि कएल जा सकैछ
‘हिनका चल’ दौक तखन ने ?
टाड घिंच लेल बहरिया भितरिया
‘दुनू भरस’ लोक दुक्का-फड़की
लागि पड़ल अछि । दलसब,
जनता आ राष्ट्रप्रति गम्भीर ओहि
हिसाबे ओते नहि रहि गेल अछि,
जतेक दलगत आ व्याक्तिगत
स्वास्थ्यक प्रति । खुरसी पाब’के
लेल सत्ता हथियाक’
नैतिक/अनैतिक दुनू हाथे

लेल संसद होइतोके बहुतोके बहुत चोर-चोर मसियौ भाइए लगैछ, आ बहुतो, बहुतो भुत्ते उठिए नै रहल छै । भड्डाइजीके कार्यकालके सही ढंगस', शुद्ध आत्मास' सदुपयो करए त' विकास-निर्माण, आ शान्ति-सुरक्षाक प्रत्याभूति बहुत अंशमे कएल जा' सकैछ । अहूँबेरक मन्त्री-मण्डल गठन प्रकृयामे जे ऐँढा-हिस्सी आ खिच्चा-तानी भ' रहल अछि, ओहिस्' कोनो नीक आश नहिए कएल जा' सकैछ ।

पधानमन्त्री भट्टराइ राजनैतिक बहुताे सूर-ताल मिलाक' ई अहम जम्मेवारी पौलाह अछि । हिनका एहिमे यश, प्रतिष्ठा भेटने, व्यक्तित्वक उचाइ आ जनविश्वास बढ़िने जाइन, आ हिनका आगूमे हम घटि ने जाइ, ताहूके डर देवेन्द्र जकाँ बहुताे नेताके भितरे भितरे

छनि । तौँ डरक आशंका हिनका सबस', सब भरस' रहल होइतोमे, कचकूह बहुमत आ मतलबी जोड़ीदार होइतो, कुतनीति आ कबिलौटीस' सबके समेटने आगू बढ़िक' देशक राजनैतिक नैयाके खेवके छनि ।

खाँटी आँटी लोकक लेल कोनो
बाधा-अर्चन बढ़का नहि होइछ
आ ई स्वयं त' राजनीतिक खेल
खेलाडी छथि, इन्जिनियर छथि,
आकिटेक्ट छथि, अर्थविदो छथि आ
नव नेपालप्रति अधिक संवेदनशील
छथि, ताहू हिसाबस' हिनका नव
नेपालक निर्माण आ विकासक
सबहे योजना प्रारूप तैयार करबाक
चाहिएन्हि आ अत्याधुनिक
वैज्ञानिक सूचना-प्रविधि आ
प्रभुताके गतिशील उपयोग क'
देखा' देबाक चाहिएन्हि ।

मिथिलामे चौरचन पावनि सम्पन्न
तीज देखा-सिखीस' हुआ' लागल अछि

चौठचन आ गणेश पूजा
मिथिलांचलमे एहू सालक दिन-
बेरागनमे श्रद्धा-भक्ति आ
उत्साहस' मनाओल गेल अछि ।
एहि दिनमे चौठीचान आ गणेश

घर-घरमे जाइत छला आ
चौठचन्नी रुपैया-ढौआ, सेर-
सिदहा, वस्त्र-वर्तनादि दान-
पुण्यमे मडैत छला । जाहि घरक
चटिया रहल ओकरा, ओकरे



भगवानके पूजा कएल जाइत अछि ।

एहि पावनिक परम्परा बहुत पहिनेस' अछि आ सान-आन संस्कृतिस' बहुत हटिक', दिनमे गणेश पूजा कएल जाइछ । गणेश भगवान विघ्नहर्ता, मंगलकर्ता आ ऋद्धि-सिद्धि प्रदाता छथि । उपनायक वात दोसर छै, मुदा एहि दिनमे आमलो कक बच्चासबके विद्यारम्भ माने भट्टा धराओल जाइत छल । चटिसारी परम्परामे चौठचनक प्रात भेने, गुरुजी अपन चटियासबके सङे ओकर

अडनामे तौनी गमछास' आँखिमे
पट्टी बान्हि देल करथि आ
विभिन्न भावट लटारहमसब
सहित चौठचन्नी गीत गाबि-
गाबिक' मडैत छलाह । सब
हनिके शनेचरीक चाउर-गूंड आ
निछाउर पाइ-कौड़ी आ बरखमे
एकबेरक चौठचन्नीपर गुरुजीक
पढ़ाइके एवजमे एकमुष्टक
हिसावे यथाशक्ति देल जाइत
छल आ एहिपर गुरुजीक गुजर-
गुजराँत चलैत छल । बूझल
जाइत छल जे गुरुजीक साल
भरिक कमाइ एकहि दिनमे
बार्क पृष्ठ ६ पर

सुजीत भाक चिड़ै कथा संग्रह लोकार्पित



श्रीरामानन्द युवा क्लब
जनकपुरधामक प्रकाशनमे
सुजीत कुमार झाक मैथिली
कथा संग्रह- चिड़ै, एकटा
सम्हरल सडोरल कार्यक्रममे
लोकार्पण कएल गेल

अछि । जनकपुरक स्थित एहि
क्लवक सभाकक्षमे, रोशन
जनकपुरी, जीवनाथ चौधरी,
अवधेश जनकपुरिया, अमरचन्द्र
अनिल, नवीन मिश्र, सहितक
व्यक्तित्व लोकनि संयुक्त रुपें

लोकार्पण कएलन्हि । चिड़ै
कथासंग्रह पर संक्षिप्त टिप्पणी
श्याम शशि, अवधेश पोखरेल
आ अशोक दत्त करैत सुजीत
भाक कथाकारिता आ हिनक

बांकि पृष्ठ ५ पर

किछु तत्व प्रधानमन्त्रीके चाँधपर चढ़एकन्हि अछि

ऐ बेर माओवादी सरकार बनलैए, जनता ऐस' कतेक गूंड-चाउर फाँकए ?

ई सरकार संक्रमणकालीन निरन्तरताक क्रममे बनल अछि। एहिस' अनावश्यक अपेक्षा नहि राखि, पहिनुके सरकार सनके अपेक्षा राखए। एकटा व्यक्ति कहिछु 'नै क' सकैछ। भलेहि ओ कतवो काविल आ विद्वान किएक नै हुअए। किछु तत्व हिनका चाँछपर चढ़एलकन्हि अछि। ताहि दुआरे जनता अनावश्यक अपेक्षाक गुंडू-चाउर नहिए फांकए। हिनका अवसर कम आ चुनौती बेसी छन्हि।

कोन, केहन चुनौती छन्हि ?

चूनौती बहरिया आ भीतरिया दुनू छनि । बहरिया चुनौतीके सामना पार्टी एकजुट भ'क' कएलकन्हि अछि । पार्टीक पारिवारिक उमेदवारबनाओल गेलथि । ओना पार्टी भितरस' जे संघर्ष हुआए, तकर कारण प्र.म. स्वयंके हुअ' पड़तिनि । सर्वहारा वर्गक, गरीब-किसानसबके, जेकर ओ राजनीति करैत छथिन्ह, ओकर सपना, ओकर ओहि लक्ष्यके ल'क' चलतिथिन्ह त' नीक, नै त' ओकर कारण ओ स्वयं होएता से कहब । बाहरी कारणमे प्रतिपक्ष एखन मजगूत छै । दोसर सरकारके स्वरूप अपनामे एकटा चुनौती छै । सरकारक भितरेमे मधेशीमोर्चा एकटा चुनौती छै । कहियो नै मिल'बला तत्व चमत्कारी रुपस' एक भ' गेलैए आ ओ चमत्कार छै कि नइ ? हिनका एहन बेडके जोख' पड़तिनि, जे बेर-बेर पलरापरस' भागि पड़ाएत ।

बाकि पृष्ठ ५ पर

बांकि पृष्ठ ५ पर



-रोशन जनकपुरी

प्रकाशक : कुमार भास्कर

सम्पादक : प्रा. परमेश्वर कापड़ि

सहसम्पादक कौलास दास

कार्यालय : जनकपुरधाम-१६, पुलचौक

फोन नं.: ०४१-५२४९५२

मो.नं. : ९८४४०२२५९४,

: ९८४४०५३९७३

: ९८४४१००१६४

ईमेल : dhuadhaja@yahoo.com

मुद्रक: त्रिदेव अफसेट प्रेस

जनकपुरधाम, फोन नं.: ०४१-५२२५९०



सम्पादकीय

गल्तीक दण्ड नेता आ दल पाबए की नइ ?

संविधानसभाक म्याद तीन महिनाके लेल ओना थपा गेल अछि मुदा ई विश्वास सबके छै, जे ठेकले दिनमे संविधान नइके नइ बनतै ! संसदक हैसियतस' अन्तरिम संविधानमे दशम् संशोधनक' तेसर बेर ई कार्यकाल बढ़ाओल गेल अछि, से आवश्यकताक सिद्धान्तके दोहाइ द'क' ।

संघीय लोकतान्त्रिक गणतन्त्रात्मक नेपालक नव संविधान आ संरचना विकासक लेल संविधानसभाक चुनाव भेल होइतोमे, एकरा संसदक हैसियत सेहो प्राप्त छै आ एहि हिसाबे ई संविधान लेखन आ संरचना विकासक काज कम आ सरकार बनाव' खसाब'के राजनैतिक खेल बेसी खेलिक' जनताकेसङे अन्हेरी गलाकट्टी क' रहल अछि ।

तीन महिनाके कोन बात, चाहए त' एक पख वा एक महिनामे संविधान खुसफैलस' लिखि सकैत अछि ! मुदा एत' सब निराश एहि दुआरे अछि जे फेरु एहि म्याद भरिमे संविधान लिखल एहि दुआरे नइ जएतै जे देशक दल, आ नेतासब एकरा प्रति थोड़को प्रतिवद्ध नहि अछि । नेताके काज देशके राजनीतिके, समस्त विकास निर्माणक काजके नेतृत्व आ सचेष्ट भ' निरीक्षण परीक्षण करव अछि । देशमे अन्तरिम संविधान छै, राजनीतिक अनुशासन छै, लोककल्याणकारी राज्यक जन उत्तरदायित्व आ संविधानसभा प्रतिक प्रतिवद्धता होइतोमे, एखन लगैछ जे सबगोटे, ईसब बातके ताखपर राखिक' राजनैतिक सत्ताक खुआ खा' रहल अछि ।

ई एना कते दिनधरि चलि सकैए ? देशक सार्वभौम जनता निराश भेल कतेक दिन धरि सहि सकैए ? नव नेपालक निर्माणक मनसूबा केनाक' कहिया धरि बिसरि'क' देशक राजनीतिके मूल्यहीन आ अप्रतिवद्ध बना सकैए— दलसब ? प्रश्न भारी आ आक्रमक होइतो सरोकारी आ संवेदनशील अछि । गरीब-बेरोजगारी, अशान्ति-असुरक्षा स' बेसी भारी आब ई राजनैतिक मूल्यहीनता, अद्योगति आ अप्रतिवद्धता लागि रहल अछि, । राजनीतिक चलते देश अराजकता, निराशा आ अन्हेरक चपेटामे पड़ल अछि । एहि सबस' एहि स्थिति-बोधक पीड़ास' जनताके मुक्ति होएवाक सबटा राज्याधिकार सुरक्षित होइतोमे, ई आखिर भेटतै कहिया ? सरकार एत' सब ढनमनहे बनैछै आ एहनमे ई दैतै के ? जे नहि द' सकैछ ओकरा जनता करए की ? आम जनता जँ जानि-बान्हिक' वा अनजानमे गलती करैए, त' ओकरा अनिवार्य दण्ड भेटवे करैछ, एखन त' लगैछै जे देशक दल आ नेतासब गल्तीपर गल्ती कए रहल छै, ओकरा दण्ड भेट'के चाही की नइ ?

ओना जनताके हाथमे चुनावक चामुक त' छैह, नेताके इहो गम्भीरतास' सोचवाक चाही जे हमसब खुरसीक खेलमे पार्टी फोड़ैत रहलहुँ, जे ई नहि कएलहुँ से पार्टी भितरेमे लौबी ठाढ़ कएलहुँ, बहुतो स्वस्थ/अस्वस्थ लिखित अलिखित सहमति असहमति सब कएलहुँ, तेकरो सबके पूरा नहि कए, कराए राजनैतिक मूल्यहीनता देखएलहुँ, तेकरा सबके लेखा-जोखा बेर पड़ने जनता लेबे करत !

लोक कला:-

भित्तिचित्र

भित्तिचित्र, मिथिलाञ्चलमे लिखियाक नामे परम्परित र हल अछि आ ई अधिकतर विवाह उपनायनक अवसरपर घर-दुआरक टाट, देवालके छछूड़ि-पोतिक', ओहिपर ई चित्रसब पाड़ल ककएल जाइछ । एहि दुआरे ई घर-श्रृंगार कला आ जातीय पहचानक प्रतीकक रुपमे रहल अछि । एहि सांस्कृतिक कलामे पहिने बुढ़िया-पुरैनियाँक साधल हाथ काजुल परिकल्पना बहुत सकारात्मक रागात्मक र हल अछि । अपन भित्तिचित्र लोक राग-भास आ मनोविज्ञानक अछि आ शास्त्रीयता एवं अभिजात्यताक कोनो बेगरता एकरामे नइ देखल गेल अछि ।

परम्परा बहुत नम्हर आ विस्तृत होइतो एकरामे, एकर मनोविज्ञानमे, एकर सौन्दर्यक नव प्रतिमानमे, आ वजारवादी उपयोगीतामे कालखण्डीय प्रभावक हिसाबे युगीन परिवर्तनक किछु छाँही, धाही देखल जाइछ सेहे नहि



ज्योति सुनील चौधरी

जन्म तिथि -३० दिसम्बर १९७८; जन्म स्थान-बेल्हवार, मधुबनी; शिक्षा -स्वामी विवेकानन्द मिडिल स्कूल टिस्को साकची गर्लस हाई स्कूल, मिसेज के एम पी एम इन्टर कालेर, इन्दिरा गान्धी ओपन यूनिवर्सिटी, आइ सी डबल्यू ए आइ (काँस्ट एकाउण्टेन्सी); निवास स्थान-लन्दन, यू.के.; पिता- श्री शुभंकर भा, रुमशेदपुर; माता- श्रीमती सुधा भा, शिवीपट्टी । ज्योतिकेँ धधधायभतचथाअक सँ संपादकक चौयस अवार्ड(अंग्रेजी पररुयक हेतु) भेटल छन्हि । हुनकर अंग्रेजी पद्य किछु दिन धरि धधधायभतचथकयगडाअक केर मुख्य पृष्ठ पर सेहो रहल अछि । ज्योति मिथिला चित्रकलामे सेहो पारंगत छथि आ हिनकर मिथिला चित्रकलाक प्रदर्शी ईलिंग आर्टग्रुप केर अंतर्गत ईलिंग ब्रोडवे, लंडनमे प्रदर्शित कएल गेल अछि । कविता संग्रह अर्चिस प्रकाशित।



बूढ़िया-पुरैनियाक हाथस' ई कला आब लव-लौतारि बेटी-पुतौहक हाथमे आएल जा' रहल अछि आ ई बहुत शुभ संकेत अछि । पिहुआ आब कुची बनि गेल अछि आ करिखा, हरदि, चूना आ हरियर घास-पातक पिसुआ रंगक ठामपर आब चलानी रंग प्रयोगमे आबि गेल अछि, ततबे कहाँ ई आब टाट देवालपर कम आ कागज कैनभासपर अधिक देखल जाइछ । अमूर्त कलाक देखा-सिखीस' किछुगोटे आब परम्परागत आ अमूर्त कलाक फ्यूजनमे प्रयोग कए, नव बाट गढ़ि रहल अछि ।

एहि पानि ओहि पानि सबमे मिलाक' घनेरौ हाथ मन एहिमे लागल छथि मुदा एहि ठाम, इन्टर नेटपर भेटलि, अप्पन अडना घरक दूटा सुहबे दाइ धीके चित्र सहित प्रस्तुत कए रहलहँ अछि –



श्वेता भा (सिंगापुर)



ओ जे कएलनि E-mail

dhuadhaja@yahoo.com

अहाँ नै कहबै त' लोक बुझतै गमतै केना ? अखैनतो जे मुहजाब लगाक' गुम्मी सधनो, ठौंसा वेड फुलल बैसल रहबै त' बदिअल-बहसल विन विचारीसब उदाम बनल बलधौसी बलपेली कैरते रहत ! एकरा रोक' टोक' आ सैर-साबतु कर'के लेल संचारी बनू आ सोभे निशंक भ'क' E-mail करु !

धान कुटू धनियाँ ...! हमरा अलवत्त लागल । ओइमे सबर डिया बात, किछु धीपल, किछू कटाहो आ बहुत अर्थे सपत्तिया यथार्थ लागल । काँच-पाकल सब बात ओइमे विचारे रहैछै । ओना समाचार विश्लेषण, सम्पादकीय आ लेखसब सेहो बड़ नीक रहैए ।

- प्रा. विनोद साह
जनकपुरधाम

बड़ भारी बात लगैए जे सब दिन एक मधेश प्रदेशके नारा लगाक' ओकर राजनैतिक रोटी पकौनिहार मधेशी मोर्चा आइ सत्ता साभेदारी सशर्त कएलखिन्ह अछि । ओहिमे त' समग्र मधेश प्रदेश आ हिन्दीक कोनो अत्ता-पत्ता नइ अछि । एहन मधेशीके मधेशक गद्दर कहल जाय ? मैथिली, भोजपुरी अवधी आ थारु भाषाक शत्रू कहल जाय ?

- सर्व नारायण भा,
मलंगवा सर्लाही

देशमे बाबूराम भट्टराइ सनके नीक आ धोएल लोक प्रधानमन्त्री भेलखिन्ह अछि । आशा पलाएल अछि जे हिनका कार्यकालमे कहत किछु होएतै । जे नै होएतै, तेकर शुरुआत अवश्य होएतै । विकासके मन हुअ चाही, कार्यक्रम रह' चाही, बजेट आ एकर सफलता त' पछोड़ धएने, नेडरिअएतै !

- कृष्णा भा, महेन्द्रनगर धनुषा

धूआ-धजा जय-जय लागल । ई अंक त' पूरे विमल अंक छल । मैथिली गजल आ विमल गजलपर सब सामग्री उपरा-उपरीके छल । संयोजनके लेल साधुवाद !

- श्रुति कर्ण, जनकपुर ८

किछु

आ बहुत ओ बातसबके हिनका फराब’ पड़तनि । वास्तविकता ई छै, जे एकर जमीन माओवादी विरोधस बनल अछि आ एकरा पार पाएब हिनकालेल बड़का चुनौती छनि ।
आहि रे बा ! देखैछिए जे शुरूएमे पार्टी भितरेस’ टाड घिच’ लगलैए !

ई टाड घिचनाइ नै छै । पार्टीक लक्ष्यके हिनका नइ बिसर’के चाही । जनमुक्ति सेनाके भविष्य एखन निर्धारण नै भेलैए, ओकर पुनरवर्गीकरण नै भेलैए । जे ओहिना समायोजित नै हुअ चाहतै, ओकर राहतके पैकेज की होएतै ? सेहो एखन अनिश्चित छै । समाजमे ओकर पुनर्स्थापन केना होएतै , ताहु सवालके जबाब देब एक पक्ष अछि । दोसर माओवादी एकतर्फी रूपस’ प्रस्ताव लाएल छै, ओकरा एमाले, काँग्रेस स्वीकार नै कएलकै । तेहन अवस्थामे, सेना समायोजनमे अन्य मोडेलके छोड़िक’ अन्तिम चरणके काज— कन्टेनरके चाभी बुझाएब, ई एकटा आत्मघाती कदम बुझाइछ । अनमन घर बनस’ पहिने घरक चाभी बुझाएब सनके । दोसरमे ई निर्णय जाहि दिन भेल, ओइ निर्णय प्रक्रियामे पार्टी दिसस’ सैन्य इन्चार्य रामबहादुर थापा बादल आ सैन्य स्टाफ कुलप्रसाद केसी स्वनाम तकके सेहो नइ सामेल कएल गेल रहै । एक दिसि अहाँ सेनाके भविष्य निर्धारण करैछी आ दोसर दिसि ओकर प्रमुखके नहि रखैछी, प्रश्न जन्मै छै ! प्रधानमन्त्री बनब आ चाभी बुझाएवाक कममे कोनो अपवित्र समझौता त’ नै भेल अछि ? आ जौ ई भेल अछि त’ ई पार्टीसङे, कम्यूनिष्ट आनन्दोलन सङे, जनताके सङे, धोखा अछि । ई जनमुक्ति सेनाके विघटनक पर्यन्त लगैछ आ तएँ प्रधानमन्त्री अपन चुनौती अपने बनि रहल अछि ।

— ई सेना, हथियारक मोह माओवादीके एत्ते किए अछि ?

ई हथियार मोह नइ अइ ! ई असलमे विश्वास आ दृष्टिकोणके बात छै । से नइ रहितै त’ सेना समायोजनपर सहमतिए नै होइतै । महत्वपूर्ण बात ई छै जे असलमे सेना समायोजन हुअए, अन्तरभौलीमे नइ । जनमुक्ति सेना एकटा एहन सेना अछि जे अपन सर्वस्व न्योछावर क’क’ देशमे गणतन्त्र अनने छै । एकरापर देशके गर्व होएवाक चाही आ एकर अपमान हमसब कोनहुँ हालतमे सहिए नै सकैत छी !

सुजीत.....

लेखकीय प्रतिबद्धताके प्रशंसा कएलन्हि । मैथिली कथा लेखनके सन्दर्भमे, श्रीरामानन्द युवा क्लवक प्रकाशनक निरन्तरताके सङे सुजीत भापर विविध पक्षीय दृष्टिकोण सब रखलन्हि - रोशन जनकपुर, परमेश्वर कापड़ि, सुनील मल्लिक, अमर चन्द्र अनिल । सुजीत कुमार भा अपने लेखकीय उद्गार व्यक्त कएलन्हि त’ जीवनाथ चौधरी क्लव द्वारा मैथिलीक रचना धर्मिता आ प्रकाशनक प्रोत्साहनमे काज होइत रहत से’ भाव व्यक्त कएलन्हि । ओ इहो कहलन्हि जे मैथिलीमे बहुतो रचना आ रचनाकार सब छथि जे छपि नहि सकल अछि मुदा अगामी दिनमे एहन उपराग नहि रहत, सेहो जनौलन्हि ।

कुखुरा फार्ममा जैविक सुरक्षा


(Biosecurity) का उपाय अपनाऔं

- फार्म भित्र जनावर, मुसा, चरा आदि नपस्तेगरी कुखुराको खोर निर्माण तथा व्यवस्था गर्ने ।
- फार्म वरिपरि भाडि,फोहर तथा पानी जन्म नदिने र चुन छर्कने ।
- कुखुराको खोरमा भित्र बाहिर गर्दा बुटलाई फुटबाथमा डुवाउने ।
- खोरभित्र पस्दा,एग्रेन वा फार्ममा काम गर्ने लुगा र बुट लगाउने ।
- फार्म भित्र पस्दा र निस्कंदा साबुन पानीले राम्ररी हाथ धुने ।
- सक्रमन मुक्त गर्ने (Disinfectant) भोलमा पांग्रा डुवाएर वा स्प्रे गराएका गाडी मात्र फार्म परिसरमा प्रवेश गराउने ।
- खोरका भित्री भाग, दाना, पानीको भाडो र अन्य सम्पूर्ण उपकरणहरु निसंक्रमण गर्ने ।
- कुखुरा विरामी परेमा छुट्टै कोठामा राखी उपचार गर्ने ।
- बर्डफ्लु रोगको रोकथामको लागि निम्न सावधानीका उपायहरु अपनाऔं ।
- हांस र कुखुरालाई बेग्ला बेग्लै पाल्ने र जंगली चराको संसर्गमा आउन नदिने ।
- कुखुरा हांस र मानिस एउटै घरमा नबस्ने ।
- पंक्षीको सुली निश्चित स्थानमा राख्ने र कुल्चेर जथाभावी नहिड्ने ।
- विरामी कुखुरालाई बथानबाट अलग राखी उपचारको व्यवस्था गर्ने ।
- पंक्षीहरु अस्वाभाविक रुपमा विरामी भएमा वा मरेमा नजिकको पशु सेवा केन्द्र वा जिल्ला पशु सेवा कार्यालयमा खबर गर्ने ।
- बर्डफ्लु रोग फैलिएको मुलुक तथा क्षेत्रबाट जीवित पंक्षी र पंक्षीजन्य पदार्थ ल्याउंदा यो रोग भित्रिन सक्छ । नेपाल सरकारले बर्डफ्लु देखा परेका मुलुकबाट उक्त पदार्थ आयात गर्न प्रतिबन्ध लगाएको छ ।
- तसर्थ उक्त अवैध कार्य नगर्ने तथा गर्न नदिने कार्यमा कुखुरा पालन व्यवसायमा संलग्न कृषक,उच्चमी, व्यवसायी,उपभोक्ता लगायत सबैले सहयोग गरिदिनु हुन अनुरोध छ ।

नेपाल सरकार

कृषि तथा सहकारी मन्त्रालय

पशु सेवा विभाग



एभियन इन्फ्लुएन्जा नियन्त्रण आयोजना
बुढानिलकण्ठ,काठमाण्डौ,फोन नं.४६५०१२७
E-mail:aicpnep@gmail.com

मैथिली संसारमे बहस आ संवादककें विषय बनल चिड़ै

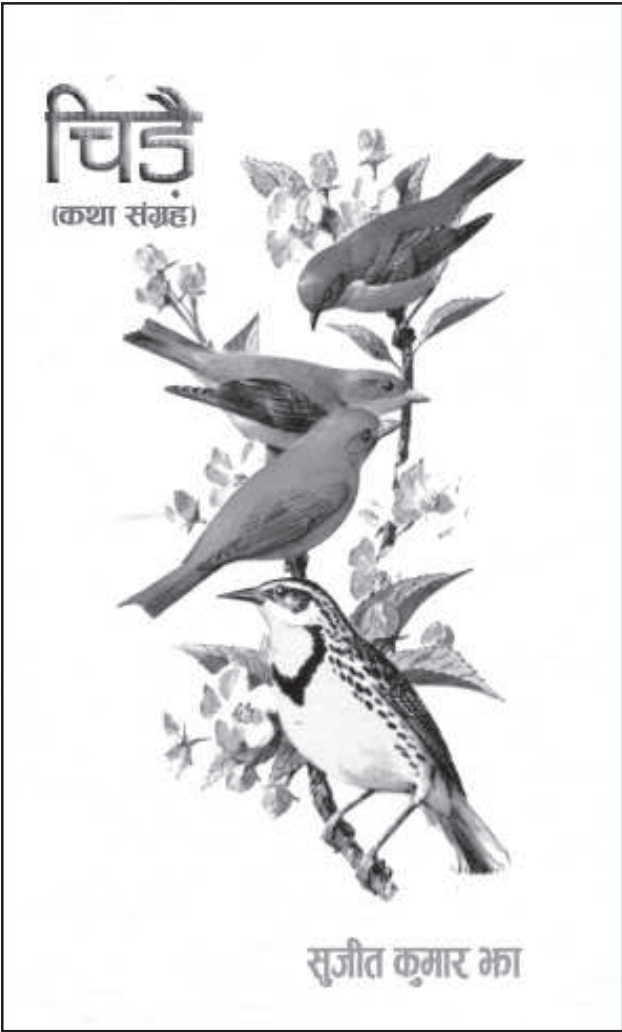
संजीवकुमार भा

जनकपुरक युवा पत्रकार सुजीतकुमार भाक पहिल कथा संग्रह चिड़ै बजारमे अविते वेश चर्चा बटोरि रहल अछि । साहित्यिक क्षेत्रमे एखन सुजीत आ चिड़ै छाएल अछि । १०८ पेजक चिड़ै कथा संग्रहमे एकटा अधिकार, धधकैत आगि: फुटैत कनोजरि, भौजी, चिड़ै प्रियंका, वरखीक भोज, बाबाजी, वंश, बनैत विगरैत, ढोल, शुन्यताक प्रवेश नाम कथासभ संग्रहित अछि । सुबोध शैली एकर विशेषता अछि त’ सभ कथा उजियाएल लगैत अछि । मैथिलीक चर्चित साहित्यकार चन्द्रेशक शब्दमे(‘ एक दिस यथार्थक कथाक उपजामे टिसैत करुणा अछि त’ दोसर दिस पीडित ताप । मानवीय बोधक प्रतिक कथाकार सतर्क सचढ आ सम्वेदनशील छथि । ई चिड़ैकें प्रमुख विशेषता रहल अछि । एकटा अधिकार कथाकें चर्चा करैत चन्द्रेश लिखैत छथि(एकटा अधिकारमे प्रेमक महता देख क’ ओहि अनुभूतिक आँच सँ जिवन आ संग्रहकें देखाओल गेल अछि । खास क’ अन्तिम परिणतिमे देहक रोइयां भलका कि दैत अछि जे स्वभाव, बुद्धि आ ऐन्द्रिकताक संगमधरि पहुँचा क’ अमिट प्रभाव छोड़ि जाइत अछि ।चन्द्रेशक शब्दमे कथाकार सुजीत जँव कनेक साकाँक्ष रहितथि आ साधल कलम सँ लिखल जाइत त’ निश्चिते ई कथा रोमानियापन चेतनाक उदाहरण बनि अपन स्वरूप महतम् उचाई धरि अनवामे सफल होइतथि, जकर बीज तत्व अहिमे सन्निहित अछि ।

साहित्यकार चन्द्रमोहन भा पडव्या चिड़ै कथा संग्रहकें उत्कृष्ट संग्रहकें रूपमे देखैत छथि । ओ अधिकांश कथा पाठकक ममें छुवैत अछि सम्वेदनाकें जगवैत अछि आ वस्तु(स्थितिक सम्यक ज्ञान करवैत अछि, जे बात विशेष प्रभावित करैत अछि, उल्लेख कएने छथि । धीरेन्द्र प्रेमर्षी सेहो कथा संग्रहकें भूमिकामे लिखने छथि(कथासभमे मानवीय सम्वेदना सँ बेसी जिवनक यथार्थसभकें स्पष्ट ढंगसँ अभिव्यक्ति देखल गेल अछि । ओहि हिसावे कथा सभमे सुजीतक पत्रकार व्यक्तित्व मुखर अछि, जे बेसी घुरि(घांटीमे नहि ओझरा क’ मोनमे लागल बात सोझ ढंग सँ कहि जाइत अछि ।

जनकपुरसँ प्रकाशित जनकपुर टुडेक भादव १५ गतेकें सर्पादकीयमे लिखल अछि(पत्रकारितामे क्रियाशील रहल सुजीतकुमार भाकें वारा प्रकाशन कएलगेल कथा संग्रह मैथिली साहित्यकार सभकलेल प्रेरक अछि । कथा, कविता, उपन्यास लगायतक साहित्य रचना मात्र केला सँ नहि ओकरा पुस्तकके रुपमे सार्वजनिक करय पड़त । भाक पुस्तक ओ प्रेरणा देलक अछि ।

ओना किछ आलोचना अहि कथा संग्रहकें किछ साहित्यकारसभ सेहो कएलन्हि अछि । पत्रकार एवं साहित्यकार श्यमसुन्दर शशि(भारतीय टिभी सिरियल स्टार(प्लसकें पारिवारिक धारावाहीसँ तुलना कएलन्हि अछि । ओ अधिकांश कथा धरातल सँ उपरकें अछि जेना ओ धारावाही सभमे रहैत अछि उल्लेख कएलन्हि । नाटककार अवधेश पोखरेल सेहो कथामे अर्जुन



दृष्टिक अभाव रहल कहैत छथि ओ चिड़ै नहि चिड़ैकें आँखि चाही । सुजीत पत्रकारिता क्षेत्रमे एकटा चर्चित नाम अछि ओ कोनो चिज लिखय त’ लोककें बहुत अपेक्षा होइत अछि । अहि संग्रहसँ हमरा अपेक्षा पूरा नहि भेल अछि, ओ कहलन्हि । अशोक दत्त मजकिया अंदाजमे कहैत छथि(छोट गाछकें बकरीयो खा’ जाइत अछि मुदा ओहे गाछ जखन नम्हर होइत अछि त’ ओहिमे हात्ती बन्हा जाइत अछि । साहित्यकार रोशन जनकपुरी अहि संग्रहक किछ भाषापर अपन आपत्ति प्रकट कएलन्हि अछि । मैथिलीकें अपन भाषा होइतो आन भाषा सँ बहुतो पैच उधार लेल गेल अछि जे नहि पचि रहल आछि, ओ कहलन्हि ।

अध्ययन आ मूल्यांकन समकालीनताक आग्रही सेहो होइछै आ चिड़ैसन कथासंग्रहक समीक्षाक क्रम अनन्त होइछ आ होइत रहत, धरि ई मानए पड़त जे ई संग्रह सुजीत भाक पहिल संग्रह अछि आ जाहि निरन्तरतास’ ई लिखिरहल छथि, हिनके दोसर संग्रहमे हिनक ई भाषा(शैली कथ्य, अन्तरवस्तु आ परिवेश निरुण बदलि गेलटा रहतै सेहे नै, एहन सनके लगतै जे ई रचना सुजीत भाक नव लेखनक साहसी देन छल आ मैथिलीमे स्थापित स्वीकृतिक लेल एकटा धमकदार डेग भरने रहथि ।

पशुहरुलाई सुरक्षित राख्ने तरिकाहरु

१. आफ्ना पशुहरुलाई समय-समयमा नामले जुकाको औषधी खुवाऔं, पशुको अकाल मृत्यु एवं आर्थिक हानी हुनबाट जोगाऔं ।
२. पशु रोग सम्बन्धी कुनै राय, सुभाब एवं सल्लाहका लागि नजिकको पशु सेवा केन्द्र/उपकेन्द्र तथा जिल्ला पशु सेवा कार्यालयमा सम्पर्क गरौं ।
३. बारैँ महिना हरियो बाँस उत्पादन प्राविधि अपनाऔं, हरिया घाँसमा आधारित पशुपालन गरौं । पशुजन पदार्थको उत्पादन लागत घटाऔं ।
४. शहर बजारको वरिपरिको हिउँदो घाँसहरुको खेतीको घाँस वृद्धि गर्नुहोस् र दोहोरो आम्दानी लिनु होस् ।
५. पराल धवाली, नलको उपयोग बढाउनलाई टुक्रा टुक्रा गरि पानीमा लिजाएर पशुहरुलाई खुवाऔं । अथवा एक प्रतिशत युरियाको घोलमा राम्ररी मुधेर पशु आहारमा प्रयोग गरि उत्पादन बढाऔं ।

जिल्ला पशु सेवा कार्यालय

कदम चौक, जनकपुरधाम

सूर्यनारायण साह

कार्यालय प्रमुख



डा.राजेन्द्र विमलक

गजल

(१)

धूम मचल,धूम मचल, धूम-धूम-धूम मचल ।
गूँजि रहल, भूमि रहल, गजल, गजल, गजल,गजल ।

हृदयक फूलवारीमे, भावक अंगूर छल,
आसव बनि छलकि उठल, पीबि जगत भूमि उठल ।

चन्द्रमाक सुधा गजल, इन्द्रधनुष-रंग गजल,
बरखा बनि बरिसल आ’ बनि-बनि मधुमास हँसल ।

सृष्टिक सौन्दर्य गजल, स्नेहकेर धार गजल,
सदा बहत,सदा बहल,जीवन-मरुमे कलकल ।

सिन्धुके गहिरै गजल, नभकेर उँचाइ गजल,
धड़कन ई, जीवन ई, जग एहि गतिसँ चंचल ।

तोड़िकए पत्थर ऊगल, हमर गजल पीपर-सन,
अगजगमे पसरत ई, छूवए आकाश चलल ।

जा’ रहत दर्द,प्रेम, रुप,प्यास,दुनियाँमे,
मलहम सिंगार,प्यार,बनि-बनि कए जाएत रचल ।

गजल अमर, गजल अटल, गजल सदा छै जुआन
चलबह तों तोप टैंक,हम पढ़व एक गजल !

(२)

अजब भूतबंगला अछि भीतर हमर,
राति होइते हम ककर-ककर चीख सुनै छी
कनैछी हम कखनो, हँसै छी कखनो,
आ डेरा-डेरा अपन दुनू कान मुनै छी ।

किछु सरश्ता दमतोड़लक,किछु सपना तुअल,
किछु मनोरथ दुधकटु जनमिते मरल,

हम ककर-ककर लाशके जोगाक’ राखू ?
तैं अपनहुँ ले’ अपनेसँ कबर खुनै छी ।

बेचैन बहुत हवा छै, घबड़ाएल छै मौसम,
आ घर-घरसँ धधराके लपट छै उठल
एकटा बच्चा ओकर दूधके डिब्बा बचावह लेल,
हम शब्दकेर केथरी दिनराति बुनै छी ।

टुटि गे जहियासँ शीशासन दिल,
कीमत एकर ओजनमे आओर बढि गेल,
एकर चुन्नी पछपड़या गेलै बनि टीस गजलमे,
तैं आवेशसँ हम एक-एक टीस चुनै छी ।

बाप होकि माय हो,बहिन होकि भाय हो,
डुबए लगै छै नाओ तँ के संग डुबै छै
सबहक हिस्सामे अपन भाग्यक रुइ बाँटल छै,
हम सभ अपन भाग्य रुइ स्वयं धुनै छी ।

(३)

खोपामे समयकेर खोंसल गुलाव छी ।
हमरा के बान्हि सकत ? नदीकेर बहाव छी ।

युग-युगसँ मुक्तिकेर गीत हम गबैत छी,
कोशी बलान छी, भेलम, चनाब छी ।

इसिहास हमर खूनकें चाहए त’ लिखए पानि,
नीसा हमर उतरत नहि, हम ओ शराब छी ।

ककरा हम दियौ हाक, राति ई निसबद् छै,
अपनहि छी हम सवाल, अपनहि जबाब छी ।

सगर राति दीप जरा, भोरकें जोहैत रही,
भोरमे उठाओल गेल, रातुक पड़ाव छी ।

खुशीक गीत लिखल, पन्नासभ फाटि गेल
दर्द भरल कथा शेष, फाटल किताब छी ।

बाजल, तारासभक खून क’क’ उगल सुरुज,
जिन्दाबाद आसमान, हम इन्किलाब छी ।

(४)

मटिया तेल नई अछि त’, सोनित अपन गाड़ि लिय’ ।
हमर कान्ति गीतसँ, दियौरीसभ बारि लिय’ ।

अजगर अन्हरियाकेर डरसँ पड़ा जाएत,
तरहत्थीपर संकल्पक सुरुजटा उत्तारि लिय’ ।

धधकल ने चुल्हा त’ आँत धधकबे करतै,
आँतसँ आवाज मिला, चुल्हा पजारि लिय’ ।

जहियासँ आएल ओ, खूनक बरिसात भेल,
डूबल चिनमार मुदा, बाँहिकें उधारि लिय’ ।

जोड़ि बाँहि बाँहिसँ, जोरसँ आवाज दियौ,
रोटी चोरओने अछि, पेट ओकर फाड़ि लिय’ ।

बहिरा करइत अछि, डँसैत रहत, पूजू नहि,
घेँटे छपटि दियौ, हाथमे तरुआरि लिय’ ।

हमर खून जे पीलक, कए देबै खून तकर,
अपन खून-खूनमे, धधरा पसारि लिय’ ।

रावण-बध धर्म थिक,जरत पापके लंका,
डंका से पीटि-पीटि, धर्म-ध्वजा गाड़ि लिय’।

शब्दक हुक्कालोली,भँजिते हम रहव विमल
चेतनाक दीपावली , सजा आ’ सिझारि लिय’ ।

मिलबैत चलू बन्धु हमर, शब्द संगे शब्द,
बरिसत ई भात बनि, आडन अजवारि लिय’ ।

(५)

ठारि खसलै कोना, कतए, पूछु ने मीत
जे कोपर उगल तकर उत्सव करी
राति अहिना भेयाओन अबै जाइ छै,
एखन अन्तसकेर गागरि किरन सँ भरी

अएलै दलकी विध्वंशकेर तांडव नेने,
देखिते-देखिते ई संसार खंडहर भेलै,
किछु दिन कँपतै धरा, फेर धीरो हेतइ,
फेर सुन्दर सृजन हेतइ, धीरज धरी,

ई छहकी जुआनी छै छाहरि छनक,
से छनेमे छिहलि जेतइ छेही जेकाँ,
जे पियब से पियब, जे जियबसे जियब,
एखन जीवनकेर प्याला लबालब भरी ।

श्वास-प्रश्वास सभके छै बन्हकी पड़ल,
दर्द पल-पलकेर ब्याजक असूली थिकै
जावे आबए महाजन करए बेदखल,
आउ जीवनमे प्रीतिक नगीना जड़ी ।

सगरो सहसह करैत अछि, करिया करइत ,
छी बीहुरमे जनमल, नियति थिक हमर,
बनि सपेरा खेलाबी बिखधरकें हम,
थिक पलायनसँ नीक जे लड़ी वा मरी

(६)

खोपामे समयकेर खोंसल गुलाव छी ।
हमरा के बान्हि सकत ? नदीकेर बहाव छी ।

युग-युगसँ मुक्तिकेर गीत हम गबैत छी,
कोशी बलान छी, भेलम, चनाब छी ।

इसिहास हमर खूनकें चाहए त’ लिखए पानि,
नीसा हमर उतरत नहि, हम ओ शराब छी ।

ककरा हम दियौ हाक, राति ई निसबद् छै,
अपनहि छी हम सवाल, अपनहि जबाब छी ।

सगर राति दीप जरा, भोरकें जोहैत रही,
भोरमे उठाओल गेल, रातुक पड़ाव छी ।

खुशीक गीत लिखल, पन्नासभ फाटि गेल
दर्द भरल कथा शेष, फाटल किताब छी ।

बाजल, तारासभक खून क’क’ उगल सुरुज,
जिन्दाबाद आसमान, हम इन्किलाब छी ।

जय
माँ
वैभव लक्ष्मी

सूचना

राष्ट्रिय अखण्डता, सामाजिक मर्यादा, भेदभावरहित
सत्य तथ्य सूचनाको सम्प्रेषण, शान्ति प्रबर्द्धनमा अग्रसर
हुनु हामी सबैको कर्तव्य हो ।


नेपाल सरकार

सूचना तथा सञ्चार मन्त्रालय

सूचना विभाग

विचार प्रवाह

धान कुटू धनिया ... !

<div>सत्ताके खेल</div> <div>– ई.जुगल किशोर</div> <div>आब देखू सत्ताके खेल !</div> <div>सहमतिएमे सब प्रतिबद्ध स्वार्थमे लिप्त सत्ता आवद्ध कठिन प्रयास त्रिदेव बीचि मेल</div> <div>आब देखू सत्ताके खेल !</div> <div>कायम हो सहमतियक संजाल बाजल नेता माधव नेपाल बरख बितलने भेल कमाल खुर्सी हँसेतैमे भीड़ल खनाल भल्न प्रचण्डमे भेल मेल</div> <div>आब देखू सत्ताके खेल !</div> <div>गृह मन्त्री लेल भीड़ल दलाल खतराक शंका आंटल खनाल महाराज हाथ सुरक्षा संजाल माओ दल बीच मचल बवाल</div> <div>आब देखू सत्ताके खेल !</div> <div>हारल भल्लू छोड़लक गद्दी सहमतिए लेल सबहक जिद्दी असफल सहमतियेक बहुमतिया विकल्प शान्ति संविधानक आबए संकल्प फानल मधेशी मधेशीयोमे मेल</div> <div>आब देखू सत्ताके खेल !</div> <div>मधेशी दलपर प्रचण्डक हाथ एक मुष्ट मोर्चा देलक साथ प्रधानमे बाबू आगू राम भट्ट त’ अपने राइसंग नाम सेना समायोजनमे चिरा पड़ि गेल</div> <div>आब देखू सत्ताके खेल !</div> <div>प्रधानमन्त्री शान्ति प्रतिबद्ध निर्णयानुकूल कायम कटिबद्ध मोहन फेकलक बाँसुरिक बोल देवैक जौ चाभी त’ चुकाएब मोल माओवादीमे पसरल भेल</div> <div>आब देखू सत्ताके खेल !</div>	<div>मैथिली लेखनक प्रोत्साहन लेल प्रकाशन</div> <div></div> <div>– जीवनाथ चौधरी</div> <div>हम त’ समीक्षक छी नै जे सुजीत भाके कथासंग्रह चिड़ैके समीक्षा एत’ कर’ चाहब । हँ, एतेक जरूर कहब जे क्लब सुजीत भाके रचनाधर्मिताके, मैथिली नव लेखनके प्रोत्साहन स्वरूप एकर प्रकाशनमे लगानी लगएलक अछि । हमरा लगैए एहिस्’ कथाकार भा सृजनात्मक उत्साहक ऊर्जा पाओत आ इएह बात श्रीरामानन्द क्लबकके लेल, मैथिलीक हकमे, अति महत्वपूर्ण बात अछि । एहन-एहन बहुतो मैथिली रचनासबके प्रकाशनक सोच हमरासबके अछि । कोन केकरस’ महत्वपूर्ण बात, प्रकाशनक कमके अछि ।</div> <div>मैथिली सबस’अछि, सबके अछि !</div> <div>– निमिष भा, साहित्यकार, पत्रकार</div> <div>मैथिली क्षेत्रमे एखन अस्तित्व स्वीकार/अस्वीकारक किछु घिनाओन द्वन्द-संघर्ष चलि रहल अछि । ऐतिहासिक काज बड़ बढ़ियाँ त’ भेलै मुदा सामान्य कार्यस’ प्रवृत्तिक निर्माण होइछ आ विविध पक्षीय नियमित प्रतिबद्धता आ कमबद्ध उपक्रमके कोनो कम महत्व होइछ, से त’ नहि छै । मैथिलीएमे एकटा आओर अधलाह बात देखल गेल अछि आ ओ अछि– मैथिलीक महान बनि सर्वमान्य बनबाक प्रवृत्ति ! किछु लोक भगवान बनि उपर जएबाक कममे आनके अनेरे बूड़िवान बनब’ चाहैत अछि । हमरा जनिते जाबत धरि एक दोसरके स्वीकारतै नै, ओकर महत्वक अनिवार्यताके अवधारतै नै, एकहन आ एकमुहरी भ’क’ चलतै नै, ताबत धरि मैथिलीक कल्याण आ विकास सम्भवे नहि छै । मैथिली सबस’ छै, सबके छै आ समग्रतः सबहक सक्रियता एकर सम्पूर्ण रचनाधर्मिता आ सृजनात्मकताके बढ़ौतै । तएँ एखनुक अनिवार्य आवश्यकता मन मिथिला कए, सामूहिक प्रतिबद्धताक संगहि व्यक्ति-व्यक्तिक योगदान आ क्रियाशीलताके सकारात्मक मूल्यांकनमे अछि ।</div> <div>मधेशीके कर’ चाही स्वागत</div> <div>– बलराम साह, वुद्धिजीवि, शिक्षक</div> <div>जाहि कालखण्डमे देशक राजनीति अपनेमे ओझराक’ अनेरे घुरमुरिया खेला रहल अछि, ताहि समयमे बाबूराम भट्टराइजी प्रधानमन्त्री बनलाह अछि आ देशक जनता हिनकापर बहुत आश उमेद पोसने अछि । हमरा लगैए जे ई जनविश्वासके तोड़तै नै । देशमे एखन सबस’ बड़का रोग छै– भ्रष्टाचारी आ ई प्रधानमन्त्रि बनिते विलासिताके दूर करैत, नेपाल निर्मित गाड़ीपर सवारीक’ कए तरहें शुभ संकेत देलथिन्ह अछि । भ्रष्टाचारिता आ विलासिता हिनका कार्यकालमे नहि रहत, से उमे कर’ चाही । भट्टराइजी नेपालक इतिहासमे एहन पहिल प्रधानमन्त्री भेल छथि जे मधेशीके, प्रधानमन्त्रीक रिजर्व कोटा आ महत्वपूर्ण मानल जायबलामेस’ अधिकतर देलथिन्ह अछि । ई आंट आ विश्वासेपर गृह, रक्षा, विदेश देवलेल तैयार छथिन्ह आ ई बड़ पैघ बात छै । ताहू दुआरे हम त’ ई कहब जे हिनका सबस’ बेसी स्वागत आ सहयोग एम्हरस’ भेटबाक चाही । रहलै बात कधेशी नेताके त’ जँ ईसब एहि सुन्दर अवसरके उपयोग कए अपन छविके नहि सुधारत त’ खत्ता खाएत, से हे नइ, बहुत पछताएत आ इतिहास एकरासबके एहि बातके लेल कहियो माफ नइ करतनि ।</div>
---	---

मिथिलामे चौरचन पावनि

असूलाइत छल । आब जे पढ़ाइके परम्परा आ सेवासुविधा अछि से पहिनेकत्र’ पाइ । एखनुक वोर्डिङ्ग स्कूलक सब बाप त’ नइ मुदा सब बाबा-परबाबा भगबा पेन्हने, दुरा-दलानक अडनइमे, भूइएमे आ काठक पाटीपर पढ़ने छल होएताह । कारण तहिया स्कूल आ वोर्डिङ्गस्कूल नहि छल ।

मिथिलामे चौठीचान भगवानक पूजाक शुरुआत मिथिलाक तत्कालीन नरेश एवं प्रसिद्ध ज्योतिषी महाराज हेमांगद ठाकुर कएने रहथि । पितृपक्षमे ई पावनि मिथिलामे मनाओल जाइछ । रतुका सब पूजामे सदानैतस’ चन्द्रादि पंच देवताक पूजा होइत आएलोमे, एहि चौठीचानक दिनमे चन्द्रमाके पितृभावस’ बहु विधि पूजा अराधना कएने लोकक समस्त आश-मनोरथ पूरन होइछ । चन्द्रमा मनके देवता सेहो छथि आ एहि दिनमे मिथिलाक लोक रीति-नीतिस’ पूजने समस्त ताप आ पापक नाश होइछ, कल्याण होइछ ।

एहि सम्बन्धमे आरो विभिन्न धार्मिक आध्यात्मिक आ पौराणिक तथ्य सत्य रहल होइतोमे ई पावनि मिथिलामे लोक विधि एवं परम्परा अनुसार दाइ-माइ सब द्वारा कएल जाइछ ।

एहि पूजा दिन चौठीचानके सङे अपन कुल वंशक मरल पितृगणके श्रद्धा-भक्तिपूर्वक पूजा-अराधना जाइछ । हिन्दू मूल्य-मान्यतानुसार मरला उत्तर जीवके विभिन्न योनी आ जन्म-जन्मान्तरमे भटक’ पड़ैछ मुदा एतुका लोक विश्वास एगो इहो अछि जे मरल पितृगण अपन-अपन सूक्ष्म शरीर ग्रहणक’ अदृश्य रूपमे देवताभावे रहैत छथि । चौरचन, जितिया आ पितृतर्पण एत’ पितृपूजाक हिसाबे सेहो कएल जाइछ । दियावाती दिनमे हुक्कालोली हुनकासबमेस’ बाट भुतलालके बाट देखएबाक हिसाबे भांजल जाइछ ।

आन संस्कृतिक देखा-सिखीस’ आब अपनो सबके समाजमे भादव शुक्ल तृतीयाके तीज पावनि शिवपूजाक रूपमे दाइ-माइसब द्वारा कएल जाइछ ।

लवका सोहर

मुदा नूनस’ सराबोर अछि । घोंटा नहि रहल अछि । पश्चिमाहासभ तब उजर भेल रहैय की ! सभके नूनेस’ पाउण्ड पकड़ने रहैय ।

बरियातीसभ अपनांमे बतियाइत, चौल-मजाक करैत खाइत रहए । घरबैयासभ जनतब देलखिन- माछ त हलुवाइ बनौने अछि । हमसभ त’ नहि बूझलियै ।

बरियातीसभ खा-पी सूत’ गेलाह । आँखि कि लागल छलै बर आबि क भोकासी पाड़िक’ कान लागल । ओ पिताजीके रंगबिरंगक बात कह लागल– हम बियाह नहि करब ! हम भागि जाबि । बरियाती सभ उठि बैसला– यौ की भेल ?

–की हायत, रुपैया लोभे हमर गरदिन काटि लेलनि । अपन आँगूरके अघेपर दोसर आँगूर रखैत जे अतबे टटा आँगूर छै । आँखि सँ दसोधारा नोर बहैत छल । हम आत्महत्या क’ लेव । भैयाके बकार नहि फूटे । मुदा एहनोमे लालेकका अपनापर अपजस किएक लेताह । ओ तराक सँ सफाई दैत कहलन्हि– आब की करब ? हमसभ कनिया त’ नहि देखने रही ! अहिँके म्या या मौसीसभ देखासूनि कएने रहए ।

बियाह भ गेल छल । भिनसरो भ गेल । किछु बचियासभ आबि बरके अँगना ल’ गेल । जलपान सँ पहिने सोहाग पड़ल । बरियातीसभ मुहाँमुहीं करैत निकलल । भैयाके सेहो बेटाक पीडा बर्दास्त नहि भेलै । ओ अपन साढ़ूके गारि पढ’ लगलाह– एहे हमर बेटाक गरदिन काटि लेलक ! जानि, कमिसन खएने छल ।

लोकसभ तोक-भरोस देव’ लागल । मुदा हुनका कुहेसा फटैन । रहि-रहिक’ जेना’शूल मारैन । ओ बड़बड़ाय लगैथ ।

जलपान भेलै । भोजनो सबेरे भेल । बरियातीसभ जनौ धोती लैत, बिदाह भेला । मुदा वरक पीडा कम नहि भेल छल ।

बाबू जखन कहलखिन्ह– आब रह’, हम सब चलै छी, कि बर भोकासी पाड़ि कान’ लागल । ताबतेमे एकगोट गौआ बाजल– हे पाहुन, आब कानिक’ की करब । भेल बियाह मोर करबा की धीया छोड़ि लेबा की ? लिखल नहि केओ मेति सकैत अछि ।

–यौ पाहुन, यौ सिनेमाके जया-अमितभके जोड़ी याद करु । एकटा भलमन बूढ़ परबोधैत कहलकनि– हे बाबू ! आबक सुन्दरता देहक ठाठमे नइ, पहिरन ओढ़नमे, पढ़ाइक परभुतामे छै । जेहन आँट औकाइत हुअ तेहन बनक’, गढ़ि-मढ़ि लू !

वरके मन ऐस’ खातिर होएबै नै करै । महा अगम अथाह बात लगै । ओ हँसत-मुसकियात कपार, होइनि जे कापर फेड़ि आत्म हत्या कएली ।

आहिरे बा ! कोम्हर नै कोम्हरस दुगोट आएल आ लागल पमरिया जकाँ नाचि-नाचिक’ सोहर गाबि-गाबिक’ बधैया माड़’–

- हे, जेकर बीबी छोटी ! टिमिक टिमिक धूम वाह !
- जेकर बीबी मोटी ! टिकटिक धूम ! टिकटिक धूम ! धूम धूम धूम वाह !
- हे छोटी-मोटी , मोटी-छोटी !
- कारी-गोरी, गोरी-कारी !
- नमकी-घोंड़ही, घोंड़ही नमकी !
- जत्त’ जेना बैसालू ।
- है अनकासनके कोन काम है !?!
- जेकर बीबी छोटी ! टिमिक टिमिक धूम वाह !
- जेकर बीबी मोटी ! टिकटिक धूम ! टिकटिक धूम बावह वाह !
- धूम धूम धूम ! टिमिक टिमिक धूम !

